

KHAN G.S. RESEARCH CENTRE

Kisan Cold Storage, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna-6

Mob. : 8877918018, 8757354880

By : Khan Sir

(मानचित्र विशेषज्ञ)

दिल्ली दरबार

- दिल्ली दरबार भारत में राजसी दरबार होता था। यह इंग्लैण्ड के महाराजा या महारानी के राजतिलक की शोभा में सजते थे। इसका आयोजन दिल्ली के कोरोनेशन पार्क में किया जाता था। सन् 1877 से 1911 के बीच तीन दरबार लगे थे। सन् 1911 का दरबार एक मात्र ऐसा था जिसमें सम्राट स्वयं जार्ज पंचम आये थे।

1877 - दिल्ली दरबार

- 1876 - शाही पद अधिनियम आया जिसमें महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किया गया और 1 Jan 1877 को दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया। इसे लार्ड लिटन ने आयोजित किया।
- सार्वजनिक तौर पर 1877 महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किया गया। और साथ ही महारानी को 'कैसर-ए-हिन्द' की उपाधि दिया गया।
- 1876-78 में दक्षिण भारत में अकाल था, और इस दरबार में वेशुमार धन खर्च किया गया। इस कारण इसका विरोध होने लगा। इसमें कोई भी भारतीय जनता के हित में निर्णय नहीं लिया गया।
- महारानी विक्टोरिया का संदेश के अंश-कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल में दर्ज है। इसमें महारानी ने कही कि यह अवसर हमारे प्रजा और हमारे बीच में मधुर संबंध स्थापित करेगा।

1903 - दिल्ली दरबार

- इसे लार्ड कर्जन ने आयोजित किया।
- सम्राट एडवर्ड सप्तम् और महारानी एलेक्जेंडा को भारत का सम्राट और साम्राज्ञी घोषित किया गया। सम्राट स्वयं इस दरबार में न आकर अपने भाई ड्यूक ऑफ कनॉट को भेजा।
- यह सर्वाधिक शानो शौकत वाला दरबार था। इस दरबार को एक सप्ताह तक आयोजन किया गया।
- इसमें अस्थाई नगर बसाया गया, अस्थाई रेल, डाक, तार, पानी, बिजली, अस्तबल आदि।
- इसमें स्वयं लार्ड कर्जन और लेडी कर्जन ने नृत्य भी किया। सबसे खर्चीला दरबार यही था। यह दरबार केवल शक्ति प्रदर्शन का था। इस दरबार में भी भारतीय जनता के हित में कोई निर्णय नहीं लिया गया।

1911 - दिल्ली दरबार

- इसे लार्ड हार्डिंग-II ने आयोजित किया।
- जार्ज पंचम और महारानी विलियम मेरी को भारत का सम्राट और साम्राज्ञी घोषित किया गया। इसमें सम्राट स्वयं उपस्थित थे।
- सम्राट को 8 मेहराब वाला एक मुकुट पहनाया गया जिसमें सैकड़ों हीरे जवारात जड़ित था।
- पटियाला की रानी की तरफ से विलियम मेरी को हार उपहार स्वरूप दिया गया।

- दिल्ली में वर्तमान में कोरोनाशन पार्क नामक जगह में दिल्ली दरबार लगाते थे।
- इस दरबार में बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय सम्राट के द्वारा लिया गया।

निर्णय - 1 :- बंगाल का विभाजन रद्द

- 16 Oct. 1905 (लार्ड कर्जन) में बंगाल का विभाजन किया गया था।
- 1911 में विभाजन रद्द कर दिया गया।

- बंगाल का पुर्नगठन किया गया
 - बंगाल
 - उड़ीसा, बिहार
 - असम को कमिशनरी क्षेत्र

निर्णय - 2 :- राजधानी को 1911 में दिल्ली रक्षानान्तरित करने का निर्णय।

- कलकत्ता से दिल्ली राजधानी
 - निर्णय - जार्जपंचम = 1911
 - 15 दिसम्बर 1911 को नई दिल्ली की नींव जार्जपंचम के द्वारा रखी गयी
 - 1912 में राजधानी दिल्ली स्थानान्तरित

दिल्ली को राजधानी बनाने का कारण

- प्रथम विश्व युद्ध का माहौल
- सुरक्षा के दृष्टिकोण से – दिल्ली राजधानी सुरक्षित थी।
- दिल्ली की अवस्थिति मध्य में थी। दिल्ली से पूरे भारत पर नियंत्रण करना आसान था।
- राजनीतिक इतिहास
- बंगाल अब राष्ट्रवाद का गढ़ बन चुका था।

नई दिल्ली

- दिल्ली के दक्षिण में 1911 में नई दिल्ली की नींव पड़ी। नई दिल्ली की रूपरेख तैयार करने का कार्य ब्रिटेन के वास्तु विद एडविन लुटियन ने हरवर्ट बेकर के साथ मिलकर किया। और 1927 में नई दिल्ली नाम दिया गया। 1931 में नई दिल्ली का उद्घाटन वायसराय लॉर्ड इरविन के द्वारा किया गया।

‘जन गण मन’ विवाद

- सर्वप्रथम 1911 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में जन-गण-मन गाया गया।
- इसी अधिवेशन में जार्ज पंचम के स्वागत का प्रस्ताव भी पारित हुआ था। और एक गीत बच्चों के द्वारा जार्ज पंचम के सम्मान में एक गीत ‘बादशाह हमारा’ गाया गया। इस गीत के रचयिता कवि रामभूज चौधरी थे।
- बंगाल के अंग्रेजी अखबार में यह छपा था। कि कलकत्ता अधिवेशन में जार्जपंचम का स्वागत प्रस्ताव पारित हुआ और जन-गण-मन गाया गया। इस कारण विवाद हो गया।

